APPENDIX-IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY
AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Name of Scholar (In English) **Suman Kumari Meena**

(In Hindi) सुमन कुमारी मीना

2. Title of the Research Work :

(In English) **In pursuit of 21th century journals (In specail reference to female writers)**

(In Hindi) २१वीं सदी के यात्रावृत्तों का अनुशीलन (महिला रचनाकारों के विशेष संदर्भ में)

3. Location

A. Institution/Deparment where the work is to be done

Department of Hindi Govt. College, Tonk (Raj.)

B. Geographical area of Investigation, if Any. - Yes

4- Interoduction, Importance of Proposed Investgation Objectives

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचयात्मक महत्व एवं उद्देश्य

हिन्दी गद्य साहित्य को नवीन दृष्टि एवं दिशा प्रदान करने वाली आधुनिक युग की विभिन्न विधाएँ साहित्य सर्जक रही हैं। जिनमें यात्रा साहित्य, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, निबन्ध, संस्मरण, डायरी आदि सभी विधाओं पर समान अधिकार से लेखनी चली तथा हिन्दी के परम्परागत अनुसंधान विषयों जैसे– निबन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी आदि पर अब तक अनेकशः अनुसंधान हो चुके हैं किन्तु हिन्दी गद्य की अन्य कई विधाओं यथा सूचना प्रौद्योगिकी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, आत्मकथा, डायरी लेखन आदि पर बहुत कम अनुसंधान ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इन पर शोध की परम् आवश्यकता है।

हिन्दी के यात्रावृत्त यद्यपि बहुतायत हैं। यात्रा साहित्य लेखन अपने देश काल की दशा व दिशा से गहरे रूप से संबद्ध होते हैं। जिनमें समकालीन यथार्थ का गहरी संवेदनशीलता के साथ चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं के समान यात्रा वृतान्त भी एक विकसित विधा बनी हैं। जो स्वतंत्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ। यात्रा साहित्य एक ऐसा दर्पण है जो लेखक की कलात्मक अनुभूतियों को संवेदना के साथ प्रस्तुत करता है। यात्रा स्त्रीलिंग संस्कृत शब्द है, जिसकी व्युत्पत्ति संस्कृत के या "धातु के ष्ट्रन" प्रत्यय लगाने से हुई हैं। इसका अर्थ हैं– एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

यात्रा शब्द की उत्पत्ति के विषय में हिन्दी के विश्वकोश में डॉ. नगेन्द्र बसु ने लिखा हैं– "विजय की इच्छा से कहीं जाना, चढ़ाईः पर्याय व्रज्या,

अभिनिर्माण", प्रस्थान, गमन्, गम् प्रस्थिति। दर्शनार्थ देवस्थानों को जाना तीर्थाटन। एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना किसी यात्रा का जीवन्त विवरण और लेखक की उससे जुड़ी संवेदनायें मिलकर यात्रा वृत्तान्त का निर्माण करती हैं। लेखक के यात्रा वृत्तान्त का निर्माण करते समय उसके मूल में उसका प्रकृति के प्रति प्रेम और उसके दार्शनिक विचार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यात्रा वृत्तान्त के चित्र पाठक के समक्ष पूर्णरूपेण उभरे हों। यही कारण हैं कि यात्रावृत्त लिखने वाला, इतिहासकार से अधिक चित्रकार होता है।

इस प्रकार ये यात्राएँ महान् व्यक्ति ईसा, बुद्ध, महावीर, रामानुजाचार्य के समय से चली आ रही है। सर्वप्रथम हस्तलिखित यात्रावृत्त 'वनयात्रा' बिट्ठलनाथ जी का माना है। प्रथम यात्रा साहित्य सन् 1883 ईस्वी में श्रीमती हर देवी द्वारा लिखित "लन्दन यात्रा" भी माना जाता है। मुख्यतः डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने यात्रा वृत्तान्त का प्रारम्भ भारतेन्दु से माना है। तिवारी के शब्दों में "हिन्दी साहित्य में यात्रा वृत्तान्त लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु से माना जाता हैं। भारतेन्दु ने 'सरयू पार की यात्रा', मेंहदावल की यात्रा' और लखनऊ की यात्रा' आदि शीर्षकों से इन वृत्तान्तों का बड़ा रोचक और सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है।" भारतेन्दु के बाद यात्रा साहित्य की एक अखण्ड परम्परा देखने को मिलती हैं। इन वृत्तान्तों में हिन्दी प्रदेश में निवास करने वाले विशाल मानव–समुदाय के मानसिक क्षितिज की सूचना मिलती हैं। इन रचनाओं में १८वीं सदी भारतेन्दु युग का प्रथम वृत्तान्त पं. दामोदर शास्त्री का "मेरी पूर्व दिग्यात्रा" (1885), देवी प्रसाद खत्री कृत (1893), "रामेश्वर यात्रा" व "बदरिकाश्रम यात्रा" हैं। १९वीं सदी के द्विवेदीयुग में शिवप्रसाद गुप्त कृत "पृथ्वी प्रदक्षिणा" (1924) महत्वपूर्ण हैं। इनके बाद २०वीं सदी के स्वातंत्रपूर्व युग में घुमक्कड़ शास्त्र के महापंडित राहुल सांकृत्यायन की

महत्वपूर्ण भूमिका रही। स्वातंत्रोत्तर युग में बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि अज्ञेय का ''एक बूँद सहसा उछली'' व ''अरे यायावर रहेगा याद'' प्रमुख हैं।

इसी प्रकार २१वीं सदी में भी रचनाकारों के द्वारा अनेक यात्रा वृत्तान्त लिखे गये। जिनमें महिलाओं के कृष्णा सोबती का ''बुद्ध का कमण्डल लद्दाख'', आशा पाण्डे कृत बादल को घिरते देखा हैं'', मृदुला गर्गकृत कुछ अटके 'कुछ भटके', कुसुम खेमानी कृत कहानियाँ सुनाती यात्राएँ'' आदि प्रमुख हैं। लेखकों में असगर वजाहत कृत ''चलते तो अच्छा था'', डॉ. श्याम सिंह शशि कृत ''मेरी विश्व यात्राएँ'', रामनाथ पसरीचा कृत ''हिमालय की यात्राएँ, मनोहर श्याम जोशी कृत ''क्या हाल हैं चीन के'' लीलाधर मंडोलाई कृत ''कालापानी'' आदि प्रमुख हैं।

इनके यात्रा वृत्तान्त संस्कृति, इतिहास, समाज, भौगोलिक स्थिति के एक भरे पूरे आर्केस्ट्रा हैं। ये साहित्य लेखको ने अनुभूति, अनुभव संस्कृति मंथन की अपेक्षाकृत गहन जटिल किन्तु अनिवार्य प्रक्रिया से गुजर कर व्यक्त किया है। अनुभवों की सच्चाई और संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति इनकी प्रमुख विशेषता है। लेखन उनका व्यवसाय नहीं अपितु अनुभूति की रचनात्मक अभिव्यक्ति है।

२१वीं सदी के साहित्यकारों ने भी अपने यात्रावृत्तों में समकालीन संदर्भों को जाना, उन्हें अनुभव किया और अपने आस–पास हो रही पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति सचेतता को अपनी रचनाओं के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने की कोशिश की।

इस युग के साहित्यकार हमारे समय के अहम् व अद्वितीय साँस्कृतिक मूल्यान्वेषी हैं। वे परम्पराओं और संस्कारों में मेल जोल स्थापित करना चाहते हैं। इनके यात्रा साहित्य अनुभव की ऊँचाई से निकलकर जीवन की समतल ठोस भूमि पर जल की भाँति प्रवाहमान हैं। अनुभूति, मंथन, अनुभव, साक्षात्कार, आत्मविश्लेषण उनकी सृजन प्रक्रिया के अनिवार्य अंग रहे हैं। इसी

कारण इन साहित्यकारों के अधिकर यात्रा वृत्तान्त आत्मकथात्मक होते हैं। यात्राओं से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इन यात्रा वृत्तों का स्वरूप समय स्थान और क्षेत्र के अनुरूप बदलता रहता है। साहित्यकारों का कहना है कि हर दशक की कहानी, उपन्यास, समाज के बदलते स्वरूप के कारण भिन्न होते हैं। ऐसे में हम हर यात्रावृत्त, कहानी, उपन्यास में एक नवीनता का अनुभव करते हैं और अलग–अलग रीति–रिवाज, वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान, भौगोलिक प्रकृति, प्रदेश व पुरातन से साक्षात्कार करते हैं। अभिव्यक्ति की एक नई और अलग ही चुनौती का सामना करते हैं।

यात्रावृत्तों में बुद्धि विचार यथार्थ की अनुभूति और कल्पना की अद्भुत समानुपातिक अन्विति देखने को मिलती है। सभी यात्रावृत्त सामाजिक विषयों से सरोकार रखते हैं। इन्होंने पर्यावरणीय सजगता को समकालीन परिवेश के साथ आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तित किया है। प्राकृतिक सौन्दर्य का निरूपण हिन्दी के यात्रा वर्णनों की एक अन्यतम उपलब्धि है। इन साहित्यकारों ने उच्च निम्न वर्ग में बढ़ते अन्तर, आर्थिक बदलावों से मध्य वर्ग की बढ़ती समस्याएँ, २१वीं सदी में पर्यावरणीय समस्याएँ एवं सजगता, पर्यटन की संभावनाओं का विकास, व्यवसायिक उपयोगिता, मानवीय सरोकार आदि विषयों को केन्द्र में रखकर अपना रचना कर्म किया है। इन सभी समस्याओं को समकालीन दृष्टिकोण से देखना मेरे शोध विषय का उद्देश्य रहेगा।

अतः प्रस्तावित शोध में इस पर विचार करना अपेक्षित है कि २१वीं सदी के यात्रावृत्तों के विधायी स्वरूप का कैसा चित्रण हुआ है? यह चित्रण पूर्व के यात्रावृत्तों से किन अर्थों में भिन्न है? इनमें किन–किन समकालीन समस्याओं को छुआ गया है? उनके कारण कौनसे हैं? क्या उनका उन्होंने कोई समाधान भी दिया है?

शोध अध्ययन के उद्‌देश्य एवं आयाम :

- २१वीं सदी की महिला रचनाकारों के यात्रावृत्तों की भूमिका स्पष्ट करना।
- यात्रा वृत्तान्तों के माध्यम से पाठक यथार्थ की अनुभूति व आनन्द का अनुभव करना।
- हिन्दी के यात्रा साहित्यकारों के यात्रावृत्तों में साँस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक महत्व को स्पष्ट करना।
- इन यात्रावृत्तों में सामाजिक समन्वय की भूमिका व निरीक्षण, परीक्षण आदि के अनुभवों को अभिव्यक्त करना।
- वर्तमान में बदलते समाज व साँस्कृतिक परिवेश के साथ यात्रावृत्तों के नए एवं अधुनातन मानदण्डों का स्पष्टीकरण करना।
- रचनात्मक, सृजनात्मक और समीक्षात्मक दृष्टि से यात्रावृत्तों को समझना।
- २१वीं सदी की गद्य विधा यात्रा वृत्तान्तों में वर्णित सामाजिक, ऐतिहासिक, पर्यावरणीय समस्याएँ व सजगता, साँस्कृतिक अनुभूति, प्राकृतिक वातावरण की सौन्दर्य अनुभूति को जनमानस तक पहुँचाना।
- लेखिकाओं का पाठकों को उन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना।
- अनेक संघर्षशील लेखक पाठकों के सामने विभिन्नता में एकता की विशेषता को स्पष्ट कर देश–विदेश की जानकारी प्रस्तुत करना।
- हिन्दी साहित्य की गद्य विधाओं में से यात्रा वृत्तान्तों की विषय व्यापकता को स्पष्ट करना।

- नये–नये स्थानों भूगोल, नदी, पर्वतों एवं पशु पक्षियों का परिचय देना, उन सौन्दर्य स्थलों का वर्णन करना तथा सामाजिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक विशेषताओं से मानव मात्र का साक्षात्कार करवाना।
- कल्पना और यथार्थ के मध्य पाठकों को सतही धरातल पर यात्रावृत्त उपलब्ध करवाकर उनके मन में छिपी अपार शक्ति और सम्भावनाओं को उजागर करना। यात्रावृत्तों की यही मौलिकता गद्य विधाओं में सबसे अलग सिद्ध करती है।
- स्वअनुभवों के साथ छायाचित्रों का संकलन किया जायेगा।

5- Reviw (Work, Already Done on the subject of Proposed Research Study)

शोध से सम्बद्ध साहित्य का सिंहावलोकन

यात्रा साहित्य पर समय–समय पर कई शोध किये गये हैं। किन्तु हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं यथा–सूचना प्रौद्योगिकी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, आत्मकथा, डायरी लेखन आदि पर बहुत कम अनुसंधान ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इन पर भी शोध की परम् आवश्यकता है। हिन्दी के यात्रावृत्त यद्यपि बहुतायत हैं किन्तु इस विधा पर हुए शोधों में यू.जी.सी. द्वारा अन्तर्जाल पर प्रकाशित सूची के अनुसार 1949 से 2015 तक मात्र 5 शोध प्रबन्ध प्राप्त हो सके हैं। जिन्होंने वर्तमान परिदृश्य में ''२१वीं सदी के यात्रावृत्तों का अनुशीलन'' (महिला रचनाकारों के विशेष संदर्भ में) विषय शोध अध्ययन के चयन के दौरान निम्नलिखित साहित्य ने अपनी सीमाओं के साथ शोधार्थी का ध्यान आकर्षित किया है।

1. **कुमार, डॉ. सुरेन्द्र (1962),** ''यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास'' इस शोध में लेखक ने यात्रा साहित्य की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास आदि का सामान्य अध्ययन किया गया है। अतः यह पुस्तक यात्रा साहित्य के शोध अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
2. **तिवारी, डॉ. रामचन्द्र (1992),** ''हिन्दी का गद्य साहित्य'' इस पुस्तक में हिन्दी की भारतेन्दु युग से आयी गद्य विधाओं यथा–कहानी उपन्यास, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य, रेखाचित्र आदि का विस्तृत गहन अध्ययन किया गया है। यह पुस्तक शोध अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी।

3. **सदाशिव, इरेश स्वामी (1990),** "हिन्दी का स्वातन्त्रप्राप्युत्तर यात्रा साहित्य" शोधार्थी के द्वारा इस शोध में स्वातन्त्रपूर्व साहित्य का स्वातंत्रप्राप्तोत्तर काल के साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

4. **कुमारी, नीलम (1997),** "भारतेन्दु युगीन साहित्य विधाओं का अनुशीलनात्मक अध्ययन" इस विषय में भारतेन्दु युग में उत्पन्न हुई गद्य की विभिन्न नाटक, निबन्ध, कहानी, यात्रा साहित्य आदि विधाओं का अध्ययन किया गया है। इस पुस्तक का महत्व शोध अध्ययन में उपयोगी रहेगा।

5. **त्रिपाठी, डॉ. रामकुमार (1985),** "हिन्दी यात्रा साहित्य का अनुशीलन (1985)" में शोधार्थी द्वारा हिन्दी में यात्रा साहित्य का अनुशीलन किया गया है तथा इसमें साहित्य के निबन्ध, रिपोर्ट, डायरी आदि का अध्ययन किया गया है।

6. **भाउसो, श्री प्रकाश (2004),** "स्वातंत्रोत्तर हिन्दी यात्रा साहित्य परिवेशगत मूल्यांकन" (अज्ञेय, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा व गोविन्द मिश्र) इस पुस्तक में शोधार्थी ने इन चारों लेखकों के यात्रा साहित्य में आये स्वदेश–विदेश का परिवेश, प्राकृतिक वातावरण का वर्णन किया गया है। शोध अध्ययन में इस पुस्तक का महत्व उपयोगी रहेगा।

7. **के., रम्या (2010),** "हिन्दी का यात्रा साहित्य–राहुल सांकृत्यायन" के विशेष संदर्भ इस विषय में शोधार्थी ने घुमक्कड़ शास्त्र के महापंडित राहुल सांकृत्यायन की यायावरी प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

8. **गिरी, कुमार अनिल (2015),** "छायावादोत्तर हिन्दी संस्मरण साहित्य का एक समीक्षात्मक अनुशीलन" पुस्तक में यात्रा साहित्य की संस्मरण विधा का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें एक युग विशेष छायावादोत्तर काल के संस्मरण लिये गये हैं।

9. **उषा,** ''हिन्दी यात्रा साहित्य का साहित्यिक व साँस्कृतिक अनुशीलन'' विषय पर शोधार्थी ने समाज में साँस्कृतिक व साहित्यक रूपों का अध्ययन किया गया है।

10. **गुलाम, फरीद दसावरी (2011),** ''अमृतलाल नागर के उपन्यासों में संस्कृतिक व समाज'' विषय में शोधार्थी ने इनके उपन्यासों में समाज व संस्कृति को दिये गये महत्व का वर्णन किया गया है। जो शोध अध्ययन की दृष्टि से प्रमुख है।

11. **खाँ, मोहम्मद मेहताब (2011),** ''कमलेश्वर के उपन्यासों में संस्कृति के रूप'' शोध में कमलेश्वर के उपन्यासों का अध्ययन कर इनमें संस्कृति के रूपों को स्पष्ट किया गया है।

12. **सुप्रिया (2013),** ''सहरिया जनजाति के लोक साहित्य का साँस्कृतिक अध्ययन'' विषय में एक जाति विशेष की लोक संस्कृति का अध्ययन कर उसको उपयोगी सिद्ध किया है।

13. **अनवर, जहीर (2015),** ''नानक बानी का सामाजिक व साँस्कृतिक अध्ययन'' विषय में नानक के वचनों से रचित पुस्तकों का अध्ययन कर उनमें समाहित समाज व संस्कृति के महत्व को स्पष्ट किया है।

14. **गुप्ता, देवेन्द्र कुमार (1997)** ''प्रेमचंद के साहित्य में संदर्भित सामाजिक, राजनीतिक, साँस्कृतिक संस्थाओं का स्वरूप'' इसमें प्रेमचंद द्वारा चरित साहित्य का अध्ययन किया है। उसके द्वारा बनाई राजनीतिक, साँस्कृतिक संस्थाओं की भूमिका को स्पष्ट किया है।

15. **यादव, निधि (2013),** ''हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्य में साँस्कृतिक समन्वय'' इस शोध विषय में सूफी काव्य में वर्णित संस्कृतियों के मिलाप का वर्णन किया गया है।

16. **कुमारी, मनीषा (2012),** "सतनामी सम्प्रदाय के साहित्य का साँस्कृतिक अध्ययन" इसमें शोधार्थी के द्वारा सतनामी सम्प्रदाय के साहित्य में वर्णित संस्कृति के महत्व को उजागर किया है।

17. **नाउपाल, शिम्बु (2015)** "उत्तर भारत के साँस्कृतिक विकास में संतों का योगदान" इस शोध में उत्तर भारत में भक्ति का सूत्रपात सन्तों के द्वारा जो किया गया था। उनकी महत्ता स्पष्ट की गई है।

18. **मातादीन (2015)** "राजस्थान के कन्हैयालाल का साँस्कृतिक अध्ययन" इसमें राजस्थान के प्रसिद्ध कवि कन्हैयालाल द्वारा रचित साहित्य में वर्णित संस्कृति का अध्ययन किया गया है।

19. **कुमावत, नीतू (2012)** "कुँवर नारायण की कविताओं का साँस्कृतिक अध्ययन" इस विषय में कवि की विभिन्न कविताओं का अध्ययन कर संस्कृति के रूप को स्पष्ट किया गया है। ये शोध क्षेत्र का उपयोगी विषय है।

20. **कुमार, डॉ. अनिल** "स्वातन्त्रोत्तर यात्रा साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय में शोधार्थी ने स्वातन्त्रता के बाद की यात्राओं का विश्लेषण कर सामान्य रूप से अध्ययन किया गया है।

6- Research Gaps Indentified in the Proposed field of Investigation (Based on the review)

अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कार्य की अनुपलब्धता

यात्रा साहित्य पर समय–समय पर कई शोध कार्य किये गये हैं लेकिन २१वीं सदी के यात्रावृत्तों का अनुशीलन (महिला रचनाकारों के विशेष संदर्भ में) पर अलग से कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अब तक जो शोध कार्य प्रस्तुत किये गये हैं, उनमें केवल प्रारम्भिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यात्रा साहित्य में २१वीं सदी का महत्वपूर्ण अध्ययन किया जा रहा है। यात्रा साहित्य का कोई थाह नहीं है। यायावरी की सोच सामान्य मानव से भिन्न होती है।

यात्रा वृत्तान्तों का रचना साहित्य विस्तृत है। अतः इस विराट विधा पर शोध की सीमा समाप्त नहीं हुई है, अपार संभावनाएँ हैं। उन्हीं में से मेरा भी एक प्रस्तावित शोध विषय ''२१वीं सदी के यात्रावृत्तों का अनुशीलन'' (महिला रचनाकारों के विशेष संदर्भ में) है।

मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध–प्रबंध का विषय अब तक नितांत अछूता है। क्योंकि मेरा शोध कार्य समाज, संस्कृति के समन्वय की विस्तृत व्याख्या, पर्यावरण की समस्याओं के प्रति सचेतता, पर्यटन की सम्भावनाऐं प्रस्तुत करके वर्तमान युग में भी अपने विशद् ज्ञान को समाधान के रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है। परिवार, समाज व देश के प्रति मानव को दायित्वों का बोध करवाता है और सत्यं, शिवं, सुदरं की स्थापना करता है।अतः इस पर किया गया कार्य पूर्णतः भिन्न तथा नवीन होगा। मेरे शोध प्रस्ताव में २१वीं सदी के यात्रावृत्तों में चित्रित साँस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, पर्यावरणीय संदर्भों का विभिन्न आयामों के द्वारा अध्ययन अपेक्षित है।

7- Major Hypothesies

शोध परिकल्पना

यात्रा वृत्तान्त विविध भौगोलिक स्थितियों का विश्लेषण करने वाले सामाजिक, ऐतिहासिक, साँस्कृतिक, पर्यावरणीय विशिष्ट ज्ञान हैं। इन यात्रावृत्तों को ध्यान में रख मानव मन विभिन्न परिकल्पनाएँ करता है। यात्रा वृत्तान्त जो कि सम्पूर्ण यायावरी क्षेत्रों का आधार स्तम्भ हैं, उसे हाशिये पर रखा गया है।

अतः यात्रा साहित्य में महिला रचनाकारों के यात्रा वृत्तान्तों के आधार पर साहित्यिक अनुसंधान के माध्यम से व्यक्ति की चेतन अनुभूतियों की व्यापक भूमिका को अभिव्यक्त करने की परिकल्पना है।

प्रथम अध्याय में यात्रावृत्तान्तों का विधायी स्वरूप है, जिसमें हिन्दी साहित्य का स्वरूप, दिशाएँ, कथेतर गद्य विधाएँ व परम्पराओं का विश्लेषण हैं।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी यात्रावृत्तान्तों का उद्‌भव एवं विकास है, जिसमें हिन्दी साहित्य में यात्रावृत्तान्तों का ऐतिह्य विकास क्रम, 21वीं सदी के यात्रावृत्तान्तों का संचित परिचय एवं 21वीं सदी की महिला रचनाकारों द्वारा रचित यात्रावृत्तान्तों का उल्लेख किया जायेगा।

तृतीय अध्याय में 21वीं सदी के यात्रावृत्तान्तों का वस्तुगत अध्ययन, सामाजिक समन्वय की भूमिका, मानवीय सरोकार, देश–विदेश की भौगोलिक स्थिति एवं देशकाल की राजनीति, लोक सँस्कृति का अध्ययन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय में महिला रचनाकारों के यात्रावृत्तान्तों का शिल्पगत अध्ययन रचनात्मक शैली में यथार्थ के सांथ प्रबंधात्मकता को स्पष्ट करते हुए भाषायी सरलता की विवेचना की गई है।

पंचम अध्याय में यात्रावृत्तान्तों में 21वीं सदी की यात्रावृत्तान्तों का वैशिष्ट्य अध्ययन, प्रकृति का सौन्दर्यबोध, पुरातात्विक महत्व, व्यवसायिक उपयोगिता, पर्यावरणीय सजगता एवं समस्याएँ, पर्यटन की सम्भावनाओं का उल्लेख किया जायेगा।

उपसंहार :

हिन्दी साहित्य में यात्रावृत्तों के प्रभाव व महत्व का वर्णन हैं।

8- Research Methdology

शोध प्रविधि

- प्रस्तावित शोध कार्य ''२१वीं सदी के यात्रावृत्तों का अनुशीलन'' (महिला रचनाकारों के विशेष संदर्भ में) पर आधारित है। यह शोध कार्य वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, यायावरी प्रवृत्ति, समाजशास्त्रीय पद्धत्ति पर केन्द्रित हैं।
- यात्रावृत्तों में वर्णित सामाजिक तत्व प्राकृतिक वातावरण, साँस्कृतिक नैतिक ऐतिहासिक मूल्यों को पूरी तरह उजागर करने के लिए यायावरी, वर्णनात्मक, पद्धत्ति को अपनाया जायेगा। २१वीं सदी के यात्रावृत्तों के अन्तर्गत उपस्थित मांनवीय संस्कृति के विभिन्न संदर्भित रूपों का विवेचन विश्लेषण किया जायेगा।
- मेरे द्वारा किये जा रहे शोध ''२१वीं सदी के यात्रा संस्मरण, यात्रा निबन्ध, यात्रा उपन्यास, निरोर्ताज, रेखाचित्र में से यात्रावृत्तों में संस्कृति, सामाजिकता, ऐतिहासिकता, भौगोलिक स्थिति को उद्घाटित करना मेरा दायित्व रहेगा।
- शोध विषय के लिए २१वीं सदी के यात्रा साहित्य का संकलन किया जायेगा।
- शोध विषय से संबंधित संदर्भ ग्रन्थों एवं पुस्तकों से सामग्री एकत्रित की जायेगी।
- विषय विशेषज्ञों एवं पूर्ववर्ती शोधकों से परामर्श एवं सूचनाएँ प्राप्त की जायेगी।

- विषय से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधकों के ग्रन्थों से सूचनाएँ प्राप्त की जायेगी।
- पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों, साक्षात्कार एवं पत्रकारों के द्वारा आवश्यक सामग्री जुटाई जायेगी।
- विभिन्न प्रकाशकों से प्रकाशित प्रस्तावित शोध संबंधी सामग्री का संचयन किया जायेगा।
- इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न बेवसाइट जैसे– Google, Wikipedia के जरिये सूचनाएँ संकलित की जायेगी।
- अध्यायों के विषय क्रम से टिप्पणी, विवरणात्मक पद्धत्ति को काम में लिया जायेगा।

- In pursuit of 21 Century Journals (In Special reference to female writers)

9- २१वीं सदी के यात्रावृत्तों का अनुशीलन (महिला रचनाकारों के विशेष संदर्भ में)

भूमिका

विषय चयन के कारण

विषय का महत्व एवं उपादेयता

विषय के विचारणीय बिन्दु

विषय की प्रासंगिकता

प्रथम अध्याय : यात्रावृत्तान्त का विधायी स्वरूप

1.1 : हिन्दी कथेतर गद्य विधाएँ परम्परा, स्वरूप एवं विस्तार

1.2 : यात्रावृत्त एवं अन्य गद्य विधाओं की अन्तः सूत्रात्मकता

1.3 : हिन्दी में महिला रचनाकारों का विधायी स्वरूप

द्वितीय अध्याय : हिन्दी यात्रावृत्तान्तों का उद्भव एवं विकास

2.1 : हिन्दी साहित्य में यात्रावृत्तों का ऐतिह्य–विकास क्रम

2.2 : 21वीं सदी के यात्रावृत्तों का संक्षिप्त परिचय

2.3 : 21वीं सदी की महिला रचनाकारों द्वारा रचित यात्रावृत्तान्तों का उल्लेख

तृतीय अध्याय : 21वीं सदी के यात्रावृत्तान्तों का वस्तुगत अध्ययन

3.1 : यात्रावृत्तों में सामाजिक समन्वय

3.2 : यात्रावृत्तान्तों में मानवीय सरोकार

3.3 : देश–विदेश की भौगोलिक स्थिति

3.4 : देशकाल की राजनीति

3.5 : लोक सँस्कृति

चतुर्थ अध्याय : महिला रचनाकारों के यात्रावृत्तों का शिल्पगत अध्ययन

4.1 : शिल्प की परिभाषा .स्वरूप एंव वर्गीकरण

4.2 : रचनात्मक शैली

4.3 : नये मुहावरे

4.4 : नये शब्द

4.5 : बिम्ब, प्रतीक

पंचम अध्याय : 21वीं सदी की यात्रावृत्तान्तों का वैशिष्ट्य

5.1 : प्रकृतिं का सौन्दर्य बोध

5.2 : पुरातात्विक महत्व

5.3 : व्यवसायिक उपयोगिता

5.4 : पर्यावरणीय सजगता एवं समस्याएँ

5.5 : पर्यटन की संभावनाओं का विकास

उपसंहार

10- List of References

संदर्भित पुस्तकों की सूची

आधार ग्रन्थ

क्र. सं.	लेखक	ग्रंथ का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	गर्ग, मृदुला	कुछ अटके, कुछ भटके	यात्रा बुक्स, नई दिल्ली	2007
2	पाण्डेय, आशा	बादल को घिरते देखा है	दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
3	सोबती, कृष्णा	बुद्ध का कमण्डल लद्दाख	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2014
4	खेमानी, कुसुम	कहानियाँ सुनाती यात्राएँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
5	झा, मृदुला	अनुभूतियों के इन्द्रधनुष	प्रभात प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	2012
6	सूर्यबाला	अलविदा अन्ना	वैभव प्रकाशन, नई दिल्ली	2013
7	कांकरिया, मधु	बादलों में बारूद	अमर प्रकाशन, मथुरा	2014
8	शर्मा, नासिरा	जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं	रचना प्रकाशन, इलाहाबाद	2003
9	गुप्ता, रमणिका	लहरों की लय	वाणी प्रकाशन, जयपुर	2008
10	सचदेव, पदमा	मैं कहती हूँ आँखिन देखी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2014

11- Selected Bibliography :

द्वितीय सहायक ग्रन्थ

1. शशि, डॉ. श्याम सिंह : मेरी विश्व यात्राएँ
   दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली, 2012

2. वजाहत, असगर : चलते तो अच्छा था
   राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

3. पसरीचा, रामनाथ : हिमालय की यात्राएँ
   नेशनल बुक ट्रस्ट, इलाहाबाद, 2007

4. जोशी, श्याम मनोहर : क्या हाल हैं चीन के
   वाणी प्रकाशन, जयपुर, 2006

5. मंडोलाई, लीलाधर : कालापानी
   राधाकृष्ण प्रकाशन, जयपुर, 2006

6. मिश्र, अभय : दर–दर गंगे
   पेंगुइन प्रकाशन, नई दिल्ली

7. पाण्डे, शालिनी : हिन्दी के यात्रावृत्तान्त
   प्रभात प्रकाशन, जयपुर, 2011

8. बेंगड़, अमृतलाल : तीरे–तीरे नर्मदा
   पेंगुइन भारत प्रकाशन, मथुरा, 2008

9. सोडानी, अजय : दर्रा–दर्रा हिमालय
   किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली

10. गुप्ता, संदीप : कैलाश मानसरोवर की अनुभूति
    जागरण प्रकाशन, आगरा, 2004

11.	चंदेल, रूपसिंह	: दक्षिण भारत के पर्यटन स्थल नीलकण्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
12.	सोनी, जे.आर.	: इंग्लैण्ड में भारत वैभव प्रकाशन, जयपुर, 2007
13.	कमलेश्वर	: कश्मीर रात के बाद किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
14.	मिश्र, विद्या निवास	: चिड़िया रैन बसेरा प्रभात प्रकाशन, जयपुर, 2002
15.	उप्रति, डॉ प्रवीण रेखा	: हिन्दी. का यात्रा साहित्य हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2000
16.	भट्टाचार्य, डॉ. अभिजीत	: महाकवि राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्वांतरण की प्रक्रिया आनन्द प्रकाशन, कोलकाता, 2005
17.	शर्मा, डॉ. मुरारीलाल	: हिन्दी का यात्रा साहित्य स्वरूप एवं विकास क्लासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2003
18.	शर्मा, डॉ. प्रतापपाल	: हिन्दी का आधुनिक यात्रा साहित्य अमर प्रकाशन, मथुरा, 2003
19.	देसाई, डॉ. बापूराव	: यात्रा साहित्य विधाः शास्त्र और इतिहास विकास प्रकाशन, कानपुर, 2005
20.	ठाकुर, मौलूराम	: हिमाचल की लोक कथाएँ व आस्था नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2008
21.	कौर, डॉ. हरिसिमरन	: समकालीन यात्रावृत्तों में सॉंस्कृतिक संदर्भ के.के. पब्लिशिंग, दरियागंज, दिल्ली, 2009
22.	तिवारी, रामचन्द्र	: हिन्दी गद्य साहित्य विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1962

23. डॉ. हरदयाल : आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

24. देसाई, डॉ. बापूराव : गद्य की विविध विधाएँ
विनय प्रकाशन, कानपुर, 1995

25. सांस्कृत्यायन, डॉ. राहुल : घुमक्कड़ शास्त्र
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

26. शर्मा, डॉ. कैलाशनाथ : भारतीय समाज और संस्कृति
किशोर प्रकाशन, कानपुर, 1962

27. तिवारी, डॉ. रमेश : हिन्दी उपन्यास साहित्य का साँस्कृतिक अध्ययन
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1972

28. शोभाचन्द्र, डॉ. सावित्री : समाजं और संस्कृति
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1976

29. डॉ. असद : गद्य के आधुनिक रूप
ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली

30. श्रीवास्तव, डॉ. महेन्द्रनाथ : समकालीन भारतीय समाज और संस्कृति
आदर्श बुक डिपो, बरेली

31. त्रिपाठी, डॉ. रमाकान्त : हिन्दी गद्यमिमांसा
जी.टी.बुक हाउस, 1932

32. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद : सभ्यता और संस्कृति
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1955

33. सिन्हा, सच्चिदान्न : संस्कृति और समाजवाद
वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004

34. कृपाशंकर : हड़प्पा सभ्यता और साँस्कृतिक निरंतरता
किताब घर प्रकाशन, दिल्ली, 2003

35. शंभूनाथ : ईश्वर और धर्म निरपेक्ष संस्कृति
आधार प्रकाशन, पंचकूला, 1994

36. श्रीनिवास, एम.एम. : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

37. भाटिया, कैलाशचन्द्र : साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ
तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

38. राजाराम, कल्पना : भारतीय संस्कृति
स्पेक्ट्रम प्रा.लि., नई दिल्ली, 2002

39. मिश्र, रामदरश : हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992

40. उपाध्याय, डॉ. रामजी : प्राचीन भारतीय साहित्य की साँस्कृतिक भूमिका
लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

41. मित्तल, प्रभुदयाल : ब्रज का साँस्कृतिक इतिहास
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

42. किशोर, आचार्य नन्द : पत्थर और बहता पानी–संस्कृति–चिंतन
वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, 1999

43. चतुर्वेदी, रामस्वरूप : हिन्दी गद्य विन्यास और विकास
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1991

44. वर्मा, डॉ. कल्याण प्रसाद : रांघेय राघव : एक अन्तर्यात्रा विवेक
पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2011

45. शर्मा, व्यास : भारतीय संस्कृति के मूल आधार
पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2011

46. चौहान, चन्द्रमणि : भारतीय संस्कृति का एशिया की संस्कृति पर प्रभाव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

47. तिवारी, विश्वमोहन : हिन्दी का यात्रा साहित्य : एक विहंगम दृष्टि
लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011

48. मिश्र, गोविन्द : धुंधभरी सुर्खी
लोकायत प्रकाशन, जयपुर, 2006

49. बाला, मंजु : साँस्कृतिक परिवेश के संदर्भ में–श्री नरेश मेहता का साहित्य
आधार प्रकाशन, जयपुर, 2013

50. लाल, श्रीकृष्ण : आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास
लोकायतन प्रकाशन, जयपुर, 2000

51. दुबे, श्यामचरण : मानव और संस्कृति
किशोर प्रकाशन, कानपुर, 1993

पत्र–पत्रिकाएँ

क्र.सं.	पत्रिका	सम्पादक	सम्पादन वर्ष
1	यात्रा साहित्य	डॉ. कलानाथ मिश्र	25.12.2015
2	यात्रा साहित्य अंक 1	डॉ. कलानाथ मिश्र	09 जुलाई–दिस. 2016
3	यात्रा साहित्य अंक 2	डॉ. कलानाथ मिश्र	08 जनवरी–जून 2016
4	यात्रा साहित्य अंक 3	डॉ. कलानाथ मिश्र	10 जनवरी–मार्च 2017
5	आज तक	विकास त्रिवेदी	24 दिसम्बर 2014 नई दिल्ली
6	समकालीन सृजन	शंभुनाथ	कोलकाता, 2004
7	दैनिक भास्कर (दैनिक)	मधु आचार्य	जयपुर संस्करण
8	दैनिक नवज्योति (दैनिक)	नवज्योति समूह	जयपुर संस्करण
9	वागर्थ	विनय बहादुर	जनवरी 2017, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता
10	पाखी	प्रेम भारद्वाज	मार्च 2011
11	आधार शिला अंक 49		अगस्त, 2007 पृ.सं.5
12	उत्तराखंड संस्कृति अंक 4		उत्तराखंड शोध संस्थान
13	राजस्थान पत्रिका (दैनिक)	पत्रिका समूह	जयपुर संस्करण
14	जागरण		25 फरवरी 2017
15	अपनी माटी		अक्टूबर 2013
16	नवभारत टाइम्स	नवभारत समूह	24 जुलाई 2003
17	गंगनान्चल		जनवरी, मार्च 2009
18	संग्रथन		मई, 2009
19	भाषा		जुलाई–अगस्त 2009
20	संस्कृति	डॉ. ज्ञानवती दरबार	अप्रैल–जून 1995
21	भाषा यायावर साहित्य विशेषांक		मई–जून 2006

शब्द कोश– विश्व–कोश

1. चन्द्रगुप्त, डॉ. गणपति : हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश, प्र.सं.1995 एटलांटिक पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

2. वर्मा, डॉ. रामचन्द्र : मानक हिन्दी कोश हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग मण्डल, वाराणसी

3. बहारी, डॉ. हरदेव : राजपाल हिन्दी शब्कोश राजपाल एण्ड संस संस्करण, 2002

4. बहारी, डॉ. हरदेव : मानक हिन्दी पर्यायकोश विद्या प्रकाशन मंदिर संस्करण, 2000

5. वर्मा, रामचन्द्र : संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 1971

6. बहारी, डॉ. हरदेव : हिन्दी शब्द कोश राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 2011

7. वर्मा, धीरेन्द्र : हिन्दी साहित्यकोश भाग 1, भाग 2, प्र.स. 2005 संवत् तृ.स. 2015 ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

8. राय, गोपाल : हिन्दी साहित्याब्द कोश, भाग 1 से 12 तक, प्र.स. सन् 1968 से 1980 तक ग्रन्थ निकेतन, पटना

9. पं. ईश्वरचन्द्र : पारिजात कोश, 2004 परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली

10. तिवारी, डॉ. भोलानाथ : हिन्दी पर्यायवाची कोश, प्र.स. 1990 प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

11. चतुर्वेदी, बृजेन्द्र चतुर्वेदी, अनिल : वृहत हिन्दी कोश भाग–2, प्र.सं. 2007 बुक्स एवं बुक्स, दिल्ली

12. बहारी, डॉ. हरदेव : प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश विद्या प्रकाशन, 1988

S.K. VERMA R.N. SAHAI : Oxford English -Hindi Dictionary Oxford University Press, 2003

Sir. Paul Harvey : Oxford Comparison to English Dictionary Oxford of the Claredon Press, 1946

Dr. B.S. Pandit : Amit Student Concert Dictionary Student Book Depot

William Little : The Short Oxford Dictionary The Standard Lit. Company, Colutta

Signature of the Candidate with date

Name and Signature of supervisor with date & Seal

Suman
सुमन कुमारी मीना
12-7-2018

12/7/18
Associate Professor
Govt P G. College
Tonk (Raj.)